Date 13.05.20

B.Ed-II

Sub - Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement.

स्थानीय उत्पादन

महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित बुनियादी शिक्षा (नईतालीम) को आमतौर पर एक ऐसी शिक्षा पद्धति माना जाता है जो उत्पादक कार्य पर आधारित होती है। स्थानीय उत्पाद कार्य में आनेवाले काम जैसे कपड़ा उत्पादन के सभी चरण अर्थात कपास की खेती करना, फसल काटना, रूई से बिनौला अलग करना, प्रसंस्करण, टेपिंग, धुनकना, (कार्डिंग), धनी पूनियाँ बनाना, सूत कातना, कपड़ा बुनना, पहिनने के कपड़े सिलना, बढ़ई का काम, सब्जियाँ उगाना, धानी के और फूलो की बागवानी आदि। कागज बनाना, साबुन बनाना, के विद्यार्थियो द्वारा खाने के तेल का उत्पादन जैसे कार्य कक्षा 8 के ऊपर के विद्यार्थियो द्वारा किये जाते है। बढ़ईगीरी जैसी सभी हस्तकलाएँ और भारी औजारो से खोदने जैसी कठिन खोदने जैसे सभी हस्तकलाएँ और भारी औजारों से कक्षा 5 तक के परिश्रम और माँस पेशियों की ताकत लगने वाले कार्यों से कक्षा 5 तक के विद्यार्थियों को छूट दी जाती है अन्य उत्पादक कार्यों की तरह ध्यान की खेती भी कक्षा आने पर की जाती थी।

कलात्मक गतिविधियाँ जैसे कि चित्रकारी, संगीत, नृत्य और नाट्य कला, आश्रम के जीवन के अभिन्न हिस्सा थी। इन सभी गतिविधियों का प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व पर पड़ता है ये सभी कलाएँ बालक को मनोवैज्ञानिक रूप से परिपक्व बनाती है। शिक्षा के साथ किए जानेवाले कार्य के उत्पादन उच्च गुणवत्ता वाले होते है उनमे निर्माण करने वाले को मिले संतोष की भावना भी निहित होती है।

चरण-1- कपास की खेती - कपास की खेती की प्रक्रिया मे जमीन की जुताई करके बीज, पानी, खाद, खरपतवार की सफाई करके समय-समय पर आवश्यकतानुसार सभी अच्छे पूरी कर कपास की खेती होती है।

Scanned with CamScanner

चरण - II कपास का प्रसंस्करण ⇒ कपास के गोलो को उनके छिलके अलग करें फिर उनमें से बीज को निकालकर अलग करें उससे पूनियाँ के लिए बेलनाकार लम्बी छोटी बालियाँ बनाना।

चरण - III सूत कातना ⇒ पेटी वाला चरखा एक बुद्धिमता पूर्ण मशीनीकरण है जिसे स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान स्वयं गाँधी जी के मार्गदर्शन में कताई को लोकप्रिय बनाने उसकी कार्यक्षमता को बढ़ाने और सूत की गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रयोग किया गया चरखा, चिरियों की व्यवस्था, घर्षण, तनाव और घर्षण गति की पूरी धारणा के बारे में बुनियादी जानकारी प्रदान करता है।।

चरण - IV बुनाई एवं कपड़े सिलना ⇒ इन्हें भी इसी प्रकार समझा जा सकता है उत्पादक कार्य और साथ ही अन्य प्रकार के कार्यों ने जिन कौशलों और गुणो को विकसित किया उन्हें इस प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है ⇒

I कार्य प्रणाली की समझ
II किसी बात के कारण और उसके प्रभाव के बीच सम्बन्ध
III चीजों के परस्पर अनुपात, माप और तालमेल का बोध
IV लागत का प्रभावी उपयोग
V पर्यावरण और प्रकृति का संरक्षण
VI पूछने और जानने की भावना
VII करुणा, भाईचारा, दल में मिलजुल कर काम करना आदि मानवीय गुणो का विकास।